UNIVERSAL LIBRARY
OU_176389
UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81 S94D Accession No. P.G. H39

Author सुदर्शन .

Title दिल के तार. 1947.

This book should be returned on or before the date last marked below.

दिल के तार

दिल के तार

[तैंतालीस गीतोंका संग्रह]

सुदर्शन

वोरा एन्ड कंपनी पब्लिशर्स लिमिटेड

३, राउंड बिल्डिंग, कालबादेवी, बंबई २

Copyright 1947 by Sudarshan

पहली बार
अगस्त १९४७

मूल्य १।)

भूमिका

जब किसी सहृदय आदमीके दिलमें सुखकी, या दुःखकी, या आश्चर्यकी चोट लगती है, तो उससे एक आवाज़, एक झंकार, एक गूंज, एक आह और वाह पैदा होती है। इस आह और वाहको अगर शब्दोंकी पोशाक मिल जाए, तो कविता बन जाती है। इस कविता को अगर सुरीले सुरों के पंख लग जाएँ, तो गीत बन जाता है। मगर न हर एक जीवको पंख मिल सकते हैं, न हर एक कविता को सुरें मिल सकती हैं। कविता जितनी भारी होगी, उतना ही उसे गीतके पंख उड़ाने में असमर्थ होंगे। इस लिए ज़रूरी है, कि गीतका शरीर हलका-फुलका हो, तभी वह आप आकाश की ऊंचाइयों में उड़ सकेगा, तभी वह सुननेवालोंको अनदेखी दुनियाओंके अनदेखे आसमानों में उड़ा सकेगा।

सोचनेवालोंने स्वर्गको अपने अपने मनकी आंखसे देखा है, और अपनी अपनी कल्पना की कलमसे उसका चित्र बनाया है। मगर एक बातपर सब सहमत हैं। वह यह कि स्वर्ग संगीतका संसार है। कुछ महात्माओंका मत है कि संसार में संगीत स्वर्गसे उतरा है; कुछ लोगोंकी धारणा है कि गीत दुनिया को स्वर्ग में ले जाते हैं। कुछ लोग ऐसे हैं, जो कहते हैं, कि स्वर्ग जनम-मरण के दुख-सुख से छूट जाने और आत्म-आनन्द के धारे में बहकर बेसुध हो जानेका नाम है, और चूंकि गीतों में आत्माको उड़ाने और सुख-दुःख भुलाने की तासीर है, इस लिए गीतों की दुनिया ही स्वर्ग है।

कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो कहते है, कि स्वर्ग नाम है ख्यालकी उस अमरपुरीका, जहां जीवन और जगत अपने जोबनकी अंगड़ाइयां लेते हैं। और चूंकि गीत हमारे सामने जीवन और जगतके रस्ते खोल देते हैं, इसलिए जीवन और जगतका स्वर्ग जीवन और जगत के गीतों में है। ऐसे लोगोंके लिए वैराग्य और निराशा के गीत गीत नहीं हैं, मनको मिटाने और हिम्मत को हराने वाले दुशमन हैं। मगर ध्यान की आंखसे देखा जाए, तो निराशा जब अपनी सीमापर पहुंच जाती है, और धीरज जब आंखें बन्द करके अपना आप किसी दूसरी शक्तिको समर्पण कर देता है, तो यहांसे आशा और आनन्द का वह स्वर्ग शुरू हो जाता है, जहां न निराशा का पतझड़ है, न वैराग्य का अँधेरा है।

यह स्वर्ग-भूमि हमारे निकट भी है, दूर भी है। निकट इस लिए कि सामने दिखाई देती है। दूर इसलिए कि वहां पहुंचना आसान नहीं गीत और गायक आपको दुनियामें चप्पे चप्पेपर मिलेंगे। मगर ऐसे गीत और गायक कहां हैं, जो आपको इस दुनियाके जंजालोंसे छुड़ाकर उस स्वर्ग में पहुंचा दें, जहां बारह महीने बहार खेलती है, और सारा महीना चांद चमकता है; जहां दिल नाचते हैं, भाव झूमते हैं, आंखें मुस्कराती हैं। जहां आशामें निराशा नहीं, प्रकाशमें अँधेरा नहीं, जवानी में बुढ़पा नहीं।

माहिम, बम्बई
३० अगस्त १९४७

सुदर्शन

गीतों की सूची

	गीत	पृष्ठ
१	प्रार्थना	६
२	मंझधार	१०
३	कौन हमें अपनाए	११
४	नैनन की खोज	१३
५	गठड़ी में चोर	१४
६	जंगल का बेटा	१५
७	गीत सुनो	१६
८	सिपाही से	१८
९	राम नाम धन	२०
१०	झूठी प्रीत	२१
११	सांची प्रीत	२२
१२	जीते देश हमारा	२३
१३	फुलवारी	२५
१४	ज़िंदगी	२६
१५	फुलवारिन लागे चोर ...	२८
१६	गले का हार	३०
१७	सूनी दुनिया	३१
१८	उठ जाग	३२
१९	फूलकी कहानी	३४
२०	खिलने की रुत	३५
२१	सावन के दिन	३७
२२	दिल के तार	३९
२३	माया	४१

	गीत			पृष्ठ
२४	आ मन आ	...	...	४२
२५	प्यार के दिन	...	...	४४
२६	यौवन-लीला	...	...	४६
२७	जंग के देवता	...	...	४८
२८	जीवन का जुग	...	...	४९
२९	स्वर्ग ...	...	...	५०
३०	पंछी ...	...	...	५२
३१	नर्तकी से	...	...	५४
३२	अजब रतिया	...	...	५६
३३	सावन की रुत	...	...	५७
३४	एक लड़का और दिवाली		...	५८
३५	किसने ...	...	...	६०
३६	पीछे भी देख	...	...	६१
३७	जवानी दीवानी	...	...	६२
३८	बहार ...	...	...	६३
३९	पड़ोसी ...	...	...	६५
४०	प्रीतकी रीत	...	...	६७
४१	नई दुनिया	...	...	६९
४२	कोई आय बसा	...	...	७०
४३	दिल की आग	...	...	७१

प्रार्थना

नाथ अनाथन के रखवार।

कब सों तो पर लगी नजरिया कब लग करूं पुकार।
नाथ अनाथन के रखवार

फिर आयो सब दुनिया तेरी फिर आयो सब द्वार,
सब अपना अपना हित देखत कौन किसी का यार।
नाथ अनाथन के रखवार

वा को क्या कोई दुशमन मारे जा को तू तरवार,
वा को क्या मंझधार बिगारे जा को तू पतवार।
नाथ अनाथन के रखवार

मंझधार

इक नार गिरी मंझधार लगा दे पार प्रभु ।

कोइ नहीं है साथ सहारा ।
छुट गई नैया दूर किनारा ।
टूट गए पतवार लगा दे पार प्रभु ।
इक नार गिरी मंझधार लगा दे पार प्रभु ।

तुझ तक दौड़ बिचारी की है ।
मन्दिर आस पुजारी की है ।
संकट टारन हार लगा दे पार प्रभु ।
इक नार गिरी मंझधार लगा दे पार प्रभु ।

कौन हमें अपनाए

प्रभु बिन कौन हमें अपनाए ।

मात-पिता सब छूट गए हैं,
नाते सारे टूट गए हैं,
बिगरी कौन बनाए ।
प्रभु बिन कौन हमें अपनाए ।

नदिया गहरी दूर किनारा,
नइया फंसी आय मंझधारा,
पल पल डूबी जाए ।
प्रभु बिन कौन हमें अपनाए ।

दुख दर्दों के हैं हम मारे,
कृपा करो अपराध हमारे,

द्वार तुम्हारे आए।
प्रभु बिन कौन हमें अपनाए।

टूट गए हैं तार हृदयके,
खंड हुए हैं चार हृदयके,
धीरज कौन धराए।
प्रभु बिन कौन हमें अपनाए।

मनमें शूल पांवमें छाले,
दुख देते हैं दुनियावाले,
उनसे कौन बचाए।
प्रभु बिन कौन हमें अपनाए।

नैनन की खोज

खोज रहे नैन तुम्हें आओ प्राणप्यारे।

रजनी गई, भोर भई, चकई पिया पास गई,
आय देव दरस देहु, नयनन के तारे। खोज रहे०।

पंछी बन बोल रहे, डार डार डोल रहे,
देखके उदास मोहे करत हैं इशोर। खोज रहे०।

दीन हुई, छीन हुई, मान से विहीन हुई,
मात-पिता सास ससुर गारियां निकारे। खोज रहे।

आओ प्रभु धाओ प्रभु दासी को बचाओ प्रभु,
तुम्हरे बिना जगत माहीं भीर कौन टारे। खोज रहे।

गठड़ी में चोर

तेरी गठड़ी में लागा चोर मुसाफ़िर जाग ज़रा।

आज ज़रा सा फ़ितना है यह
तू कहता है कितना है यह
दो दिनमें बढ़कर यह होगा मुंह फट और मुंह ज़ोर
मुसाफ़िर जाग ज़रा
तेरी गठड़ी में लागा चोर मुसाफ़िर जाग ज़रा।

नींद में माल गंवा बैठेगा
अपना आप लुटा बैठेगा
फिर पीछे कुछ नाहीं बनेगा लाख मचावे शोर
मुसाफ़िर जाग ज़रा
तेरी गठड़ी में लागा चोर मुसाफ़िर जाग ज़रा।

जंगल का बेटा

चम चम चंदा चमके
दम दम तारा दमके
उतरकर आजा मेरे पास ।

वहीं पर शोभा बनकी
वहीं पर खुशियां मनकी
जहांपर छोटी छोटी घास ।

छोटी छोटी घास जहांपर
फूलनकी बू बास जहांपर
पिया मिलन की आस जहांपर
जंगल के बेटे की ढोलक ढमक ढमक ढमके ।
चम चम चंदा चमके ।

गीत सुनो

कान लगाकर,
ध्यान जमाकर,
आओ, सुनो इक गीत।

रंग रंगीला,
छैल छबीला,
आओ, सुनो इक गीत।

मेरा गीत बड़ा अनमोल,
इसके मीठे मीठे बोल,
इन मीठे मीठे बोलोंकी मीठी मीठी रीत।
सजनी
आओ सुनो इक गीत।

मन बहलाती हूं दिनरात,

हँसती गाती हूं दिनरात,

इस हँसने गाने का मतलब दुनिया भरकी जीत।

सजनी

आओ, सुनो इक गीत।

कान लगा कर,

ध्यान जमाकर,

आओ सुनो इक गीत।

सिपाही से

सिपाही बढ़ आगे, आगे तेरी शान ।

सिपाही :—

कल जो बात कठिन जानी थी, आज हुई आसान ।

सिपाही :—

आगे आगे बढ़ता चल तू,
ऊपर ऊपर चढ़ता चल तू,
कर देवेगी दुनिया तुझपर तन मन धन कुरबान ।
सिपाही बढ़ आगे ।

आगे तेरी शान खड़ी है,
बनकर क्या बलवान खड़ी है,
आगे बढ़कर देख सिपाही तू है शेर जवान ।
सिपाही बढ़ आगे ।

हिम्मत अपनी आप बढ़ा ले,
क़िसमत अपनी आप जगा ले,
बन्दे से बन बन्दा परवर, भक्तसे बन भगवान।
सिपाही बढ़ आगे।

कल वह दिन था जब दुनियाने देखा था लाचार तुझे,
आज लड़ाई तूने जीती आज मिले हथियार तुझे,
देख देखकर हिम्मत तेरी दुनिया है हैरान।
सिपाही बढ़ आगे।

राम-नाम धन

राम-नाम धन पाया मैंने ।
राम-नाम धन पाया ।
न मैं तीरथ करने निकसी न मैं ब्रह्म रिझाया,
राम नाम-धन आप सिमट कर मोरे घर में आया ।
मैंने :—

ना मैं गंगा गई नहाने ना मैं संख बजाया,
जनम जनम की क़िसमत जागी मन में राम समाया ।
मैंने :—

दूजा धन है आना जाना चलती फिरती छाया,
राम-नाम धन घटत घटे नहीं दम दम होत सवाया ।
मैंने :—

झूटी प्रीत

झूटे जगकी झूटी प्रीत।

सोच समझकर देख जरा मन है कोई तेरा मीत?
झूटे जगकी झूटी प्रीत।

प्रीत की महमा सब जग जाने, सब जग गावे गीत,
पर जो प्रीत करे दु:ख पावे यह अचरज की रीत।
झूटे जग की––

प्रीत की हार मरन है मनका, मरन प्रीत की जीत,
हार और जीत बुरे हैं दोनों ऐसी प्रीत पलीत।
झूटे जग की––

सांची प्रीत

जगत में सबसे सांची प्रीत।

प्रीत से सांचा कोई न जगमें कोई न ऐसा मीत।
जगत में--

प्रीत में मर कर ज़िन्दा हो जा, ऐसी इस की रीत,
हार में जीत छुपी है बन्दे, हार के बाजी जीत।
जगत में—

जीते देश हमारा

जीते देश हमारा ।

भारत है घरबार हमारा,
भारत है संसार हमारा ।
भारत के हम पंख-पखेरू,
भारत है गुलज़ार हमारा ।
जीते देश हमारा ।

चरणों में सोने की लंका,
कंठ में दरयाओंकी माला ।
इस का रूप अनूप मनोहर,
सिरपर सुन्दर ताज हिमाला
जीते देश हमारा ।

महादेव हम सबके स्वामी सब कुछ तेरे हाथ,
राह दिखा दे, जोत जला दे, आज अँधेरी रात,
हम को तेरा एक सहारा ।
जीते देश हमारा ।

देश हमारा जुग जुग जीते, सब जग महमा गाए,
सब जग को जीने मरने की सीधी राह दिखाए,
इसकी लीला अपरम्पारा ।
जीते देश हमारा ।

फुलवारी

यह दुनिया इक फुलवारी है।

रंगरंगके फूल खिले हैं, भांति भांति की क्यारी है।
यह दुनिया—

कोई कोमल कोई, काठ कठोरा, कोई सुरतिया प्यारी है,
बाहर रूप अनूप किसीका अन्दर छिपी कटारी है।
यह दुनिया—

कलियां झूमें डार डार पर सबकी शोभा न्यारी है,
कोई मोहनियां मनकी उजरी कोई मनकी कारी है।
यह दुनिया—

ज़िन्दगी

ज़िन्दगी है प्यारसे प्यारमें बिताए जा,
हुस्न[1] के हुज़ूरमें[2] अपना दिल लगाए जा।
अपना सिर झुकाए जा।
ज़िन्दगी है—

ज़िन्दगी है एक रात, प्यार इसमें है चिराग़,
यह चिराग़ जितनी देर जल सके जलाए जा।
रोशनी लुटाए जा।
ज़िन्दगी है—

ज़िन्दगी है एक बाग़ प्यार इसमें है बहार,
इसमें आंख का खुमार[3] ढाल कर मिलाए जा।
शौक़ से पिलाए जा।
ज़िन्दगी है —

(१) हुस्न—रूप। (२) हुज़ूर—उपस्थिति। (३) ख़ुमार-नशा।

ज़िन्दगी जनून[४] है जनून में निभाए जा,
तू अपने अज़्म[५] को ख़ुदाए ज़िन्दगी[६] बनाए जा।
आसमां पै छाए जा।
ज़िन्दगी है—

ज़िन्दगी है इक जुआ, दूर से देखता है क्या ?
आगे बढ़कर अपनी जान दावपर लगाए जा।
हँसके मॉत खाए जा।
ज़िन्दगी है—

हुस्न है, शबाब[७] है, वक़्त लाजवाब[८] है,
मैं भी चहचहा उठूं, तू भी चहचहाए जा।
सुर में सुर मिलाए जा।
ज़िन्दगी है—

---

(४) जनून–पागलपन। (५) अज़्म–इरादा। (६) ख़ुदाए ज़िन्दगी–जीवनका ईश्वर। (७) शबाब–जवानी। (८) लाजवाब–बेजोड़, अद्वितीय।

फुलवारिन लागे चोर

फुलवारिन लागे चोर, मालनियां सोय रही ।

इन चोरनसों चौकस रहियो
छा रहे चारों ओर—मालनियां सोय रही ।
फुलवारिन लागे चोर ।

दूजे चोर अँध्यारा खोजें,
साया और सहारा खोजें ।

फुलवारिन के चोर निराले,
इनको जैसी रैन अँध्यारी, वैसी उजली भोर,
मालनियां सोय रही ।
फुलवारिन लागे चोर ।

दूजे चोर चुराएं चांदी,

सोना, हीरा, मानक मोती।

फुलवारिन के चोर अनोखे,

सोने चांदी की काह बतियां, तन मन लेत मरोर,

मालनियां सोय रही ।

फुलवारिन लागे चोर ।

गले का हार

सखी तोहे देहूं गलेका हार ।

किधर गयो मोरे मनको रसिया ला दे खबर इक बार

सखी तोहे—

जीना मरना एक बराबर,
पी बिन कष्ट हजार ।
प्रीतम रूठा, दुनिया रूठी,
रूठा सिरजन हार ।

सखी तोहे—

जाए सखी पी सो यूं कहो,
इक नाव फँसी मँझधार ।
एक भरोसा नाथ तिहारो,
आय उतारो पार ।

सखी तोहे—

सूनी दुनिया

सूनी दुनिया,
रात अँधेरी,
आशा बुझ बुझ जाए मनकी।

कोई बता दे,
कोई दिखा दे,
जोत कहां है जग जीवनकी।
आशा बुझ बुझ जाए मनकी

सूनी दुनिया,
रात अँधेरी।

उठ जाग

उठ जाग जवानी आती है,
उठ जाग।

उठ उठ दरवाज़ा खोल ज़रा।
कुछ देख ज़रा, कुछ बोल ज़रा।
कुछ हँस ले।
कुछ गा ले।
कुछ अपना रंग जमाले।
तू क़िसमतसे ख़ुश क़िसमत है।
उठ तेरे घर में फूलों की रंगीन कहानी आती है।
उठ जाग।

उठ जाग जवानी आती है,
उठ जाग।

पीनेका मौसम आया है।

जीनेका मौसम आया है।

कुछ खा ले।

कुछ पी ले।

मरने से पहले जी ले।

कब रोज़ नसीबा खुलता है?

कब रोज़ रोज़ उजड़े दरयामें नई रवानी आती है।

उठ जाग।

उठ जाग जवानी आती है,

उठ जाग।

फूल की कहानी

इक फूल उगा बन में।

फूलके अंदर ख़ुशबू उभरी बाहर कैसे आए?
इत–उत देखे, राह मिलत नहीं, बार बार घबराए,
फूल की हालत क्या कोई जाने।
जो तन लागे, सो पहचाने।
बाहर शोभा सब कोई देखे, कोई न झाँके मनमें।
इक फूल—

फूलकी ख़ुशबू फूलसे बोली–'मैं तेरी, तू मेरा,
मेरे तेरे बीच खड़ा क्यों परदे का अंधेरा,
इस परदे को दूर हटा दे।
अँध्यारे को आग लगा दे।'
फूल उदास हुआ यह सुनकर कांटे चुभ गए तनमें।
इक फूल—

खिलने की रुत

खिलो खिलो मतवारी कलियो खिलने की रुत आई आज।
क़ुदरतने कलियों के कानों में यह बात सुनाई आज।
खिलो खिलो—

इस रुत की हर बात सुहानी,
हर दिन गीत हर रात कहानी,
इस बाँके हरियाले जुगमें जग हरियाली छाई आज।
खिलो खिलो—

कल सरदी पाले का डर था,
कल बाहर वालेका डर था,
आज गुजर गई डर की घड़ियां घर घर मिलत वधाई आज।
खिलो खिलो—

नगर डगर जंगल बन महके,

देख देख रसिया मन चहके,

सब के सिरपर झूम रही है जोबन की अंगड़ाई आज।

खिलो खिलो—

खिलो खिलो मतवारी कलियो खिलने की रूत आई आज।

सावन के दिन

सावनके दिन आए रे,
मंगवा दे चुनरिया।

घर घर साज सजाए रे,
रंगवा दे चुनरिया।

कब लग ओढ़ूं पुरानी चुनरिया
सुन्दर रूप लजाए रे —मंगवा दे०

नई चुनरिया रूप निखारे,
लाल चुनरिया रंग उभारे,
देखत मन ललचाए रे —मंगवा दे०

आ गयो बनमें रुत मतवारी
छा गयो मनमें प्रेम-खुमारी
जोबन शोर मचाए रे—मंगवादे०

मो पर दुनिया नित बलिहारे,
मो पर सूरज सोना वारे,
चांदी चांद लुटाए रे—मंगवादे०

फूल बिछाकर सेज सँवारी,
छुप छुप देखे ननद कुँवारी,
बागमें आग लगाए रे—मंगवादे०

तू नहीं आयो जोबन आयो,
नस नस पापी आग लगायो,
आकर कौन बुझाए रे —मंगवा दे०

सावनके दिन आए रे,
मंगवा दे चुनरिया।

दिल के तार

तूने छेड़े, तूने छेड़े मेरे दिल के तार।

बगिया महकी
कोयल चहकी
नाच उठा संसार।
तूने छेड़े, तूने छेड़े मेरे दिल के तार

तिनका तिनका हुआ गुलाबी,
पत्ता पत्ता हुआ शराबी,
जग को चढ़ा खुमार।
तूने छेड़े, तूने छेड़े मेरे दिल के तार।

तूने दिल के तार हिलाए
तूने सोते राग जगाए

होश हुए बलिहार ।

तूने छेड़े, तूने छेड़े मेरे दिल के तार ।

दिलपर आज जवानी आई,

बनकर एक कहानी आई,

सुनने लगी बहार ।

तूने छेड़े, तूने छेड़े मेरे दिल के तार ।

माया

जग चलती फिरती माया।

जिस आशापर मन ललचाया,
जिस पर सब घर बार लुटाया,

वह आशा जब हुई पराई सब जग हुआ पराया।
जग चलती फिरती माया।

मीठे मीठे गीत सुनाकर,
प्यारे प्यारे ख़्वाब दिखाकर,

तनमनका सुख चैन उड़ाया, दुख का रोग लगाया।

जग चलती फिरती माया।

आ मन आ

आ मन आ तुझ को समझाएं।

जीवन भर तेरे काम आए, ऐसी बात बताएं।
आ मन आ।

तूने जिसपर प्यार चढ़ाया,
जिस पर अपना आप गँवाया,
वह भी बना ना अपना तेरा आंसू भर भर आएं।
आ मन आ।

हार हुई तो रोता क्यों है,
रो रो बेसुध होता क्यों है,
अँध्यारे में ढूंढ उजारा, ढूंढ उजारी राहें।
आ मन आ।

हम प्रीतमका घर न छोड़ें,

मर जाएं पर दर न छोड़ें,

मूरख हैं, जो छोड़ के इक दर, घर घर अलख जगाएं।

आ मन आ।

प्यार के दिन

प्यार के दिन अब आए,
सजनी
प्यार के दिन अब आए।

फूल उठी मन की फुलवारी,
आ गई कैसी रुत मतवारी,
प्यार के बादल छाए,
सजनी
प्यार के दिन अब आए।

रोशन हो गईं काली रतियां,
जाग उठीं तनमन की ख़ुशियां,
दुनिया मौज मनाए,
सजनी
प्यार के दिन अब आए।

प्यार में अब खो जाएंगे हम,

ऐसे गुम हो जाएंगे हम,

कोई ढूंढ न पाए,

सजनी

प्यार के दिन अब आए।

यौवन-लीला

मैं गीत सुनाती रहती हूं।

मैं गीत सुनाती रहती हूं,
मैं मन बहलाती रहती हूं,
मैं अपने चंचल पावोंको दिन रात नचाती रहती हूं।

मैं गीत सुनाती—

जिस के मन में आग नहीं है,
जिसका जीवन राग नहीं है,
जिसके घरमें है अँध्यारा—
मैं उस हत भागे के मनमें आस जगाती रहती हूं।

मैं गीत सुनाती—

यह दुनिया दुःख-सुख की बाज़ी,
जीत किसी की, हार किसी की,
हार के जो पगला रोता है—
मैं ऐसे पगले के दिलका धीर बंधाती रहती हूं।

मैं गीत सुनाती--

जंग का देवता

जाग जंग के देवता।

जाग अपने दिलकी होशरुबा आग को जगा,
उठ अपने घरकी ख़ौफ़नाक आँधियां उठा,
तू अपनी दे दुआ हमें,
दे अपना हौसला हमें,
छा जाएं सब जहानपर दे ऐसा वलवला।

जंग के देवता।

जीवन का जुग

जीवन का जुग आया।

अँध्यारे ने सूरज देखा,
देख देख कर मन ललचाया।
जीवनका जुग—

पतझड़ में बगिया महकी है,
बगिया की रग रग चहकी है,
सोती धरती जाग उठी फिर अपना सुन्दर साज सजाया।
जीवनका जुग—

तारोंसे अब बातें होंगी,
फूल भरी अब रातें होंगी,
गई बहारें फिर आई हैं दुनिया पर जादू लहराया।
जीवन का जुग—

स्वर्ग

खुले स्वर्गके द्वार,
जग में
खुले स्वर्गके द्वार।

नगर डगर में अमृत बरसे,
पग पग खिला खुमार।
जग में
खुले स्वर्गके द्वार।

जादू की रुत छाई जगमें छाया नवल निखार,
फूल तो फूल खिले कांटे भी ऐसी अजब बहार।
जग में
खुले स्वर्गके द्वार।

जोत जगी आशाकी मनमें दूर हुआ अँधकार,
मन जागा, सब दुनिया जागी महिमा अपरम्पार।
जग में
खुले स्वर्गके द्वार।

यह रुत क़िसमत से आई है, यह रुत है दिन चार,
स्वर्ग खुला है, तू भी अपने मनके खोल किवार।
जग में
खुले स्वर्गके द्वार।

पंछी

पंछी उड़ चल अपने देश।

अपने देश चलकर मन सुख हो, मनके मिटें क्लेश।
पंछी उड़ चल०

अपने देश की तुझको धुन है,
तेरे देशमें क्या क्या गुन है,
जिसकी ख़ातिर तुझको पंछी बुरा लगे परदेश।
पंछी उड़ चल०

मेरे देशकी मस्त हवाएं,
मेरे देशकी अजब अदाएं।
मेरा देश है स्वर्गका टुकड़ा,
मेरे देश की दूर बलाएं।

मेरे देशमें गीत सुनहरे फूलें फलें हमेश।
पंछी उड़ चल०

रस्ते में संकट आएंगे,
पग पग पर भय दिखलाएंगे।
हम पंछी हैं परछाईं सम,
हम ऊपर से उड़ जाएंगे।
मदद करेंगे देव हमारे ब्रह्मा बिशन महेश।
पंछी उड़ चल०

नर्तकी से

आंखोंमें मुस्कराए जा,
आशाको गुद्‌गुदाए जा,
सूने दिलों में बस्तियां बसाए जा, बसाए जा।
आंखों में—

सुनाए जा कहानियां,
जगाए जा जवानियां,
जवानियों के रूप में फ़ितने[1] नए जगाए जा।
आंखों में—

साजन ज़रा शराब ला,
बिफरा हुआ शबाब[2] ला,
बिफरे हुए शबाब को मन की जलन पिलाए जा।
आंखों में—

१—फ़साद, झगड़े। २—जवानी।

तू ज़िन्दगी का राज़[3] है,

तू आप कारसाज़[4] है,

तू जीतकर जहान को जीने का गुर बताए जा।

आंखों में—

३—रहस्य। ४—काम बनानेवाला।

अजब रतिया

आज आई बलमवा अजब रतिया ।

इस रतियापर बलबल जाऊं,
इस रतिया पर प्राण चढ़ाऊं,
ऐसी हर रोज आती है कब रतिया ।
आज आई—

चांदी की रतिया में जलते हैं हीरे,
नीलम की सड़कों पै चलते हैं हीरे,
नस नस में समाई गजब रतिया ।
आज आई—

चांदी की रतिया में गीत उगत हैं,
सोने की बगिया में सुपने फलत हैं,
कैसी सुन्दर सलौनी सुलभ रतिया ।
आज आई—

सावन की रुत

सावन की रुत आई,
सखी री
सावन की रुत आई।

यह रुत अजब सुहानी रुत है।
वाह वाह।
मन मस्तानी रुत है।
वाह वाह।
हंस लो, गा लो, मौज मना लो, जग हरियाली छाई।
सखी री
सावन की रुत आई।

यह खाने पीने के दिन हैं।
वाह वाह।
यह जीने के दिन हैं।
वाह वाह।

मीठी रातें, मीठी बातें, सुध बुध सब बिसराई।

सखी री

सावन की रुत आई।

सावन की रुत आई,

सखी री

सावन की रुत आई।

एक लड़का और दीवाली

दीपक जलियो सारी रात।

आज रात दीवाली की है।
आज रात ख़ुशहाली की है।
आज रात न बुझियो दीपक
तब बुझियो, जब द्वारपर आकर बोले सुख परभात।
दीपक जलियो सारी रात।

तू भी दीपक, मैं भी दीपक, दोनों अपनी जोत जलाएं।
तू भी जागे, मैं भी जागूं, दोनों अपना रंग जमाएं।
दोनों कर लें मौज बहारें,
दोनों हँस कर रात गुज़ारें।
आज रात न बुझियो दीपक
मैं भी छोटा, मुँह भी छोटा, छोटी मेरी बात।
दीपक जलियो सारी रात!

किसने ?

लड़ना झगड़ना तोहे किसने सिखाया ?

जो सच–मुच परवाना तेरा।
जो पागल दीवाना तेरा।
जो सुपने भी तेरे देखे—
उससे अकड़ना तोहे किसने सिखाया ?
लड़ना झगड़ना तोहे किसने सिखाया ?

गीत है जिसके जीवनका तू।
मीत है जिसके तनमनका तू।
जो तेरी खुशियों का भूखा–
उसपर बिगड़ना तोहे किसने सिखाया ?
लड़ना झगड़ना—

पीछे भी देख

पीछे मुड़कर देख मुसाफ़िर, पीछे रह गई मंज़िल तेरी।
पीछे मुड़कर—

तू जितना आगे बढ़ता है,
हटता है तू उतना पीछे।
तू जितना ऊपर चढ़ता है,
गिरता है तू उतना नीचे।
तेरे पीछे तेरा दिन है, तेरे आगे रात अँधेरी।
पीछे मुड़कर—

जवानी दीवानी

आज जवानी।
आज जवानी।

आज सजनवा तू मदमाता, आज सजनवा मैं दीवानी
आज जवानी।

आज यह दुनिया गीत खुशीका,
आज यह दुनिया नाच किसीका,
आज यह दुनिया दिन मतवारा, आज यह दुनिया रात सुहानी
आज जवानी।

आज जवानी मदमस्तानी रूप अनूप लुटाए,
साजन आए मन लहराए, अखियन प्यार जगाए,
आज यह दुनिया स्वर्गका सुपना,
आज यह दुनिया अमर कहानी।
आज जवानी।

बहार !

पुरुषः— बनमें बहार आ गई,
तू मनमें आजा।

स्त्रीः— बनमें उमंग छा गई,
तू मनमें छा जा।

स्त्रीः— साजन आ जा,
दरद मिटा जा,
तुझ बिन मनकी नगरी सूनी,
मनकी नगरी आए बसा जा,
तू मनका राजा।
बन में—

पुरुषः— देखो आली,
जग हरियाली

क़दम क़दम पर अम्बुआ महके,
कोयल कूके डाली डाली,
तू भी कूक सुना।

स्त्री:– कू कू कू कू कू कू कू।

बनमें—

पुरुष:– तुम्हें मैं बुलाऊं!

स्त्री:– मैं काहे आऊं?

पुरुष:– कान करो इक बात सुनाऊं।

स्त्री:– क्या

पुरुष:– वह बात नहीं कहनेकी।

स्त्री:– पर मैं नहीं चुप रहनेकी।

पुरुष:– बन में बहार आ गई,
तू मनमें आजा

पड़ोसी

आओ मनमें प्रीत जगाएं।

आओ मनमें प्रीत जगाएं,
मिलन–जुलनकी रीत चलाएं,
आजकी अँध्यारी दुनियामें अपने कलके दिए जलाएं।
उस प्रकाशमें,
उस धरतीपर,
एक नया संसार बसाएं।
आओ मनमें प्रीत जगाएं।

कैसा हो घरबार हमारा,
कैसा हो संसार हमारा,
प्यारा तो इक तरफ़, मगर हो दुशमनसे भी प्यार हमारा।
उसकी जै,
सारा जग बोले,

उस की सारी दूर बलाएं।
आओ मनमें प्रीत जगाएं।

मिल-जुलकर इक साथ चलेंगे,
साथ रहे हैं, साथ रहेंगे।
जीने-मरनेके हम साथी, साथ जिएंगे साथ मरेंगे।
इक दूजेके,
बनें पड़ोसी,
जगको सीधी राह दिखाएं।
आओ मनमें प्रीत जगाएं।

प्रीत की रीत

प्रीत की रीत निराली।

प्रीत की रीत निराली।
सजनियां
प्रीत की रीत निराली।

इस दुनियामें ज्ञान यही है।
पंडित की पहचान यही है।
इसके बिना जगमें उज्यारा बिलकुल खाम खयाली।
सजनियां
प्रीत की रीत निराली।

प्रीत न मांगे दौलत माया,
प्रीत न देखे अपना पराया,

उसे अमर कर देवे, जिसने मनमें जोत जलाली।

सजनियां

प्रीत की रीत निराली।

यह नर की कमज़ोरी भी है,

यह नर की शाहज़ोरी भी है,

आप मिटा दे आप बचाले आप करे रखवाली।

सजनियां

प्रीत की रीत निराली।

नई दुनिया

आया मनपर आज ख़ुमार
छाई बनपर आज बहार
झन झन झन झन करके बाजे जगके तार तार तार।

मोरे मनकी सूनी दुनिया किसने आन बसाई रे
मोरे जनम जनमकी आशा किसने आन जगाई रे
मैंने हार दिया घरबार
मैंने जीत लिया संसार
मैं तो बन गई जादूगरनी पाके प्यार प्यार प्यार।

किसने आज जहाँ का नया निराला रंग उभारा रे
गीतोंके दिन फूलकी रातें, ठंडा नदी किनारा रे
साजन बसे नदीके पार
साजन बोले बात हज़ार
मेरा तन मन धन बलिहारी होवे बार बार बार।

कोई आय बसा

कोई आय बसा अखियनमें ।

दो दिन पहले इन अखियन में कोई आता जाता न था
दो दिन पहले इन अखियन को कोई रूप सुहाता न था
आज बदल गई सारी दुनिया,
हो गई सब मतवारी दुनिया,
अखियन में कोई आन बसा है, जोत जगी तनमन में
कोई आय बसा अखियनमें ।

जिन अखियन में कोई बसा है नींद कहाँ अब उनमें आए,
लौट गए चुपचाप मुसाफ़िर देखी जिस दम भरी सराए,
नींद गई आराम छुटा है,
दुनियाका सब काम छुटा है,
आहों में अब दिन कटता है, रात कटे उलझन में
कोई आय बसा अखियनमें ।

दिलकी आग

मन क्यों भर भर आए,
रामा
मन क्यों भर भर आए।

क्यों हर रैन कटे रो रो कर
क्यों हर दिन बीते दुःख होकर
क्यों बरखासे आग बरस कर मनकी अगन भड़काए।
रामा
मन क्यों भर भर आए।

बुझ गए जगके दीपक सारे
छुप गए सूरज चाँद सितारे
बिखर गई हर बागकी शोभा, मनका कमल मुरझाए।
रामा
मन क्यों भर भर आए

कैसे राह कटेगी मेरी,

कारी बदरिया रात अँधेरी,

मंज़िल दूर पाँव मन मनके आशा बुझ बुझ जाए।

रामा

मन क्यों भर भर आए।

मुद्रक :—र. रा. बखले, मुंबई वैभव प्रेस, मुंबई नं. ४। प्रकाशक :—अेम्. के. वोरा, वोरा ऐंड कंपनी, पब्लिशर्स लिमिटेड, ३ राऊंड बिल्डिंग, कालबादेवी रोड, मुंबई २।

हमारी और किताबें   काव्य

गांधीजी के साथ सात दिन
ले. लुई फिशर, अनुवादक : पं. सुदर्शन — २—०—०

गांधीजी की यूरोप यात्रा
ले. म्यूरिअल लिस्टर : अनु० : श्री 'रंजन' शर्मा (सचित्र) — २—४—०
दीबाचा : श्री प्यारेलालजी

वीरांगना अरुणा आसफ़अली
सचित्र, संपादक : 'दर्शन' — २—०—०

नेताजी
(श्री सुभाषचन्द्र बोस का संपूर्ण जीवन-चरित्र) सचित्र, सुधाकर त्रिवेदी — ३—०—०

नगीने
(मौलिक कथा संग्रह) ले. पं. सुदर्शन : — ३—०—०

शेषदान
(मौलिक कथा संग्रह) ले. वीरेन्द्र कुमार — २—१२—०

उर्दूके अदीब
ले. श्रीपाद जोशी; दीबाचाः—काकासाहब कालेलकर — १—८—०

आम्रपाली
(उपन्यास) ले० रामचंद्र ठाकुर, अनु० : 'दर्शन' — ४—०—०

गांधीजी के जीवन-प्रसंग
ले. मिली पोलाक : अनु० 'दर्शन' — २—०—०

हिन्दुस्तानी गद्य-पद्य संग्रह
संपादक : पं. सुदर्शन — १—८—०

जीवन—विहार
(निबंध संग्रह) : ले. आचार्य श्री काकासाहब कालेलकर — ३—०—०

कृपा किरन
(भजन संग्रह) ले. कु. रैहाना तय्यबजी — २—०—०

अंगुठीका मुक़दमा
(बालकोपयोगी कहानियाँ) ले. पं. सुदर्शन — १—०—०

सोवियत रूसमें शिक्षाप्रणाली — १—४—०

वोरा ऐन्ड कम्पनी पब्लिशर्स लिमिटेड
३, राउन्ड बिल्डिंग, कालबादेवी रोड, बंबई, २